P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हिन्दी गजल : स्वरूप और विकास

अनिता शर्मा
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग (एच.ओ.डी.),
सुबोध गर्ल्स कॉलेज,
सांगानेर, जयपुर, राजस्थान
भारत

सारांश

ग़ज़ल उर्दू–फारसी का काव्य रूप होते हुए भी हिन्दी में क्यों अपनायी जाने लगी– यह एक विचारणीय प्रश्न है। वास्तव में उर्दू में ग़ज़ल को जो प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता मिली, उससे हिन्दी कवि प्रभावित हुए बिना न रह सके। हिन्दी में प्रचलित इन विभिन्न काव्यधाराओं की प्रतिक्रिया एवं सामयिक परिवर्तन से प्रभावित होकर अगले कदम के रूप में ग़ज़ल की महत्ता को स्वीकारते हुए अपनाया गया। गजल में थोडे शब्दों में बहुत कुछ कह जाने की क्षमता भी विद्यमान है। अतः ग़ज़ल में संक्षिप्तता एवं अनुभूति की तीव्रता के कारण रचनाकारों को अपने अन्तस के भावों को जनमानस तक सम्प्रेषित करने में यह विद्या काफी उपयोगी प्रतीत हुई। हिन्दी ग़ज़ल पर भाव, भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से उर्दू ग़ज़ल का पर्याप्त प्रभाव पडा है।

मुख्य शब्द : अन्तस, सम्प्रेषित, सारगर्भित, काव्याभिव्यक्ति, अभिव्यक्ति, कंठहार, अवमूल्यन, विक्षोभ, विडम्बनाओं, त्रासदियों, परवर्ती, काव्य–सम्पदा, दृष्टिगोचर, सन्निहित, वस्ल, दुतल्ले, प्रज्ञा–विलास व हृदयगंम।

प्रस्तावना

हिन्दी ग़ज़ल हृदय की मार्मिक अनुभूतियों की संक्षिप्त, सारगर्भित एवं सशक्त काव्याभिव्यक्ति है, जिसकी अपनी निजी भाषा, निजी चिन्तन प्रक्रिया एवं निजी उपमाएँ है। हिन्दी गज़ल के कथ्य को आधुनिक संदर्भो तथा सामाजिक जन–चेतना से जोड़ दिये जाने के परिणामस्वरूप उनका वर्ण्य विषय अत्यन्त व्यापक हो गया। वर्ण्य विषय की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल के निम्न रूप किये जा सकते हैः–

1. प्रेमपरक हिन्दी ग़ज़ल
2. हास्य–व्यंग्यपरक हिन्दी ग़ज़ल
3. चिन्तन–प्रधान हिन्दी ग़ज़ल
4. हिन्दी बाल ग़ज़ल

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान युग में जब नई कविता अपनी विभिन्न शाखाओं–प्रशाखाओं में फैली हुयी है, ऐसे समय में हिन्दी ग़ज़ल अपना अलग ही महत्त्व रखती है। इसमें गागर में सागर भरने की कला है। नवीनता, उपयोगिता और भाव–प्रवणता की दृष्टि से गजल का भविष्य उज्ज्वल है। इसीलिए प्रस्तुत पत्र–प्रस्तुतीकरण का विषय हिन्दी ग़ज़ल स्वरूप और विकास लिया गया है। ताकि ग़ज़ल में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को इससे लाभ प्राप्त हो सके।

पृष्ठभूमि

गीतात्मक काव्य में आज नवगीत के अतिरिक्त केवल ग़ज़ल ही एक विशिष्ट तेवर के साथ हिन्दी में प्रचलित है। अन्य विद्याओं के लोग भी इसे काफी आशा से देख रहे है, क्योंकि इसका ढाँचा इतना पुष्ट एवं सुदृढ़ है कि अन्य विद्याएँ अभिव्यक्ति की तीव्रता को लेकर उस सीमा तक नहीं पहुँच सकती जहाँ तक ग़ज़ल जा सकती है।

हिन्दी ग़ज़ल ने काव्य को नयी भावभूमि एवं नवीन तेवर प्रदान किये हैं और वह जनमानस का कंठहार बन गई है। वस्तुतः हिन्दी ग़ज़ल समकालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक अवमूल्यन के विक्षोभ को लेकर चली है। कथ्य की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल में आधुनिक भावबोध, समसामयिक संघर्ष–चेतना एवं आम–आदमी के अस्तित्व–संघर्ष की अनेकानेक संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। इतना ही नही, जीवन की जटिलताओं, सामाजिक संघर्षो, अस्तित्व की लड़ाई, विडम्बनाओं एव त्रासदियों की व्यंग्यात्मक अनुभूति ने हिन्दी ग़ज़ल को नवीन स्वर प्रदान किये है, जिसके माध्यम से नवीन जीवन–मूल्यों की प्रतिस्थापना हो सकी है।

हिन्दी ग़ज़ल का परिचय

हिन्दी ग़ज़ल किसी परिचय की मोहताज नही है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और उनके पूर्ववर्ती कुछ कवियों से लेकर वर्तमान तक हिन्दी ग़ज़ल की एक सुदीर्घ एवं सुसम्पन्न परम्परा उपलब्ध है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी खड़ी बोली के जन्मदाता अमीर खुसरो की ग़ज़लों में भी हिन्दी ग़ज़ल के तत्व मूलरूप में विद्यमान है। कबीर और उनके परवर्ती कवियों की काव्य–सम्पदा में हिन्दी ग़ज़ल की बहुमूल्य मणियाँ भी छिपी पड़ी है, जिन्हें परखने और तराशने के लिए योग्य पारखियों की आवश्यकता है। छायावाद के आधारस्तम्भ जयशंकर प्रसाद को हिन्दी ग़ज़लकार के रूप में बहुत कम लोग जानते होंगे। प्रयोगवादी कवियों ने भी हिन्दी ग़ज़ल में अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम तलाश किया है।

गत वर्षो में हिन्दी ग़ज़ल एक नये ही रूप–रंग में सामने आई है। दुष्यंत कुमार के पश्चात् तो हिन्दी कविता में ग़ज़ल–युग का विधिवत सूत्रपात हो गया। जो ग़ज़ल उर्दू में केवल सस्ता रोमांस, हुस्नो–शबाब के तंग दायरे में सिमटी हुई दम तोडती नजर आती है, वही अब मां भारती के आंगन मे आकर फलफूल रही है। आज के श्रेष्ठतम उर्दू ग़ज़लकार एवं पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध शायर 'फ़ैज़' ने अपनी भारत–यात्रा के समय पत्रकारों को बताया कि ग़ज़ल को अब हिन्दी वाले जिंदा रखेंगे, उर्दू वालो ने तो उसका दम घोंट दिया है।

स्वरूप

कविमानस की तीव्रानुभूति को कम शब्दों में अधिक प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए ग़ज़ल एक सर्वोतम माध्यम है। चूँकि हिन्दी ग़ज़ल के लिए उर्दू–फारसी ग़ज़ल ने उर्वर भावभूमि तैयार की। अतः हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप उर्दू–फारसी ग़ज़ल से मिलता–जुलता है। इसके प्रत्येक शेर में एक नवीन विषय अथवा विचार अन्तर्निहित होता है। इनके शेरों में शब्द–सौष्ठव का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। एक भी शब्द के स्थान पर अगर दूसरा शब्द प्रयोग कर दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

हिन्दी ग़ज़ल में प्रेम एवं वासना जैसे परम्परागत ग़ज़ल के तत्वों को नकारते हुए समाज, राजनीति, धर्म, शासन एव सर्वहारा वर्ग की समस्याओं, विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का यथार्थ स्वरूप प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। कवि अपने विचार–चिन्तन एवं मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिये अभिधा से बचकर लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लेता है क्योंकि सपाटबयानी कथ्य की संप्रेषणीयता एवं उसके पैनेपन को कुण्ठित कर देती है। शिल्प की दृष्टि से उर्दू–फारसी ग़ज़ल की भांति हिन्दी ग़ज़ल में भी लैंगिक संकेत प्रदान करने वाले शब्दों का प्रयोग वर्जित माना गया है।

हिन्दी–ग़ज़ल का वर्ण्य–विषय

हिन्दी ग़ज़ल वर्ण्य–विषय की दृष्टि से जनमानस के धरातल पर नवीन आयामों का उद्घाटन करती है। विषय वस्तु के आधार पर हिन्दी ग़ज़ल को निम्न वर्गो में विभाजित किया जा सकता हैः–

1. प्रेमपरक हिन्दी ग़ज़ल
2. हास्य–व्यंग्यपरक हिन्दी ग़ज़ल
3. चिन्तन–प्रधान हिन्दी ग़ज़ल
4. हिन्दी बाल– ग़ज़ल

प्रेमपरक हिन्दी ग़ज़ल

प्रेम एक ऐसा शब्द है, जो अपने विभिन्न स्वरूप में समाज में दृष्टिगोचर होता है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में व्यक्तिवादी लौकिक प्रेम के साथ ही पीड़ित एंव शोषित मानवता के प्रति प्रेम व सहानुभूति के स्वर भी मुखरित किये है। उर्दू– ग़ज़ल से प्रभावित होने के कारण अनेक ग़ज़लकारों ने हिन्दी में प्रेमपरक ग़ज़लों की रचना की है। इन ग़ज़लो में संयोगपक्ष की अपेक्षा वियोगपक्ष का अत्यधिक प्रभावशाली चित्रण हुआ है। माना जाता है कि प्रेम की गहराई वियोगपक्ष की मार्मिक अनुभूतियों से ही उद्घाटित होती है। हिन्दी की प्रेमपरक ग़ज़ले भी इसीलिये सफल एवं प्रभावशाली सिद्ध हुई है, क्योंकि उनमें कवि के भोगे हुए यथार्थ अनुभवों की बहुरंगी भंगिमाएं सन्निहित हैं। प्रिय के वियोग में केवल स्मृति ही प्रेमी के लिए एक मात्र जीवन–सम्बल रह जाती है। रात्रि का सन्नाटा एकांत को ओर भी अधिक गहन एवं अवसादपूर्ण बना देता है। एक–एक पल एक–एक युग की भांति व्यतीत होता है और ऐसी मनःस्थिति में प्रेमी अपने प्रिय की पूर्ण स्मृतियों में विस्मृत हो जाता है। ओंकार गुलशन के शब्दों में –

''सांझ ढले जब सन्नाटा, मेरे घर का मेहमान हुआ।
तेरी यादों का मेरी तन्हाई पर एहसान हुआ।।
X X X
कैसे कैसे दिन दिखलाए मुझकों तेरी चाहत ने,
मैं अपनी बस्ती में अपने लोगों में अनजान हुआ।
अपनों ने तो हंसी उड़ाई मेरी लेकिन ऐ गुलशन,
गैरों ने अफसोस किया जब–जब मेरा अपमान हुआ।।''[2]

हास्य–व्यंग्यपरक हिन्दी ग़ज़ल

हास्य–व्यंग्य के बिना जीवन नितांत नीरस हो जाता है। जीवन के संघर्ष एवं अवसादपूर्ण क्षणों में तो हास्य–व्यंग्य मनुष्य को मानसिक रूप से स्वास्थ्य लाभ कराता है। आज के व्यस्ततम् एवं तनावपूर्ण जीवन में तो इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। इन रचनाओं के माध्यम से व्यक्ति कुछ समय के लिये अपनी चिन्ताओं से मुक्त हो खुलकर हंस लेता है और सुखद अनुभव करता है। हिन्दी साहित्य में हास्य–व्यंग्य की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। हिन्दी काव्य की अन्य विधाओं की तरह हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में भी हास्य–व्यंग्य को पर्याप्त स्थान मिला है। शासन के चाटुकारों, दम्भी देशभक्तों पुरातन पंथियों, फैशनपरस्तों, पश्चिमी सभ्यता के पक्षधरो, आपातकालीन स्थिति की उपलब्धियों एवं अन्य समसामयिक संदर्भो पर हिन्दी ग़ज़लकारों ने करारा प्रहार किया है।

सुप्रसिद्ध हास्य कवि काका हाथरसी की हास्यपरक ग़ज़ले काफी लोकप्रिय हुई है। अपनी एक ग़ज़ल के कुछ शेरों के माध्यम से उन्होंनें परिवार से लेकर संसद तक के यथार्थ स्वरूप का चित्रण बडी कुशलता से किया है–

'जुदाई में भी हमने वस्ल की तिकड़म निकाली है।
तेरी लेटेस्ट फोटो अपने सीने से लगा ली है।।

X X X
वो संसद आज की तहज़ीब में संसद नही जिसमें,
न चप्पल है, न जूता है, न थप्पड है, न गाली है।।
X X X
कहाँ साहब से कुछ तनखा बढ़ा दो, डॉक्टर बोले,
हवा खाओं मियाँ, औलाद क्यों इतनी बना ली है।।'[3]

आधुनिक वेशभूषा एवं युवा वर्ग की आचारहीनता पर प्रहार करते हुए 'बेढ़ब बनारसी' ने अपनी एक ग़ज़ल में व्यंग्य को इस प्रकार स्वर दिया–

'नजाकत औरतो–सी, बाल लम्बे, साफ मूँछे है,
नए फैशन के लोगो की अजब सूरत जनानी है।
पता मुझकों नही कुछ इण्डिया में भी है लिटरेचर,
मगर है याद सारा मिल्टनो–बेकन जबानी है।।
जनेऊ इनकी नेकटाई है, पाउडर इनका टीका है,
नये बाबू को व्हिस्की आजकल गंगा का पानी है।।'[4]

पूजा–पाठ के मिथ्याडम्बरों एवं सामाजिक मूल्यों के ह्रास पर चिंता व करारे व्यंग्य व्यक्त करते हुए कवि अनिल खम्पारिया ने कहा है–

'रात को राम धुन के हल्ले में।
जाने क्या क्या हुआ मुहल्ले में।।
नेक सीता ने खुदकुशी कर ली,
एक हैवान के दुतल्ले में।।
उड़ गये जेवरात मन्दिर से,
गल गये सेठ जी के गल्लें मे।।

चिन्तन प्रधान हिन्दी ग़ज़ल

भाव सम्प्रेषण एवं अर्थगाम्भीर्य की दृष्टि से चिन्तन–प्रधान हिन्दी ग़ज़लों का अपना अलग महत्व है। चिन्तन सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक अथवा परिवर्तनशील परिवेश के अनुकूल बदलते हुए जीवन–मूल्यों के संदर्भ में हो सकता है। ऐसी रचनाएँ पाठक को अभिव्यक्ति की तीव्रता से झकझोरते हुए कुछ सौंपने को विवश कर देती है। ये कवि की सुन्दरतम एवं गहन अभिव्यक्तियाँ है, जिनमें पाठक के लिए परत–दर–परत चिन्तन के नये द्वार खुलते जाते है। ये ग़ज़ले बुद्धिजीवियों के प्रज्ञा–विलास का साधन है। इन ग़ज़लों के माध्यम से कवियों ने जीवन को परिभाषित करने का प्रयास किया है। जहाँ एक ओर प्राचीन संतो एवं मनीषियों ने जीवन को मात्र स्वप्न की संज्ञा प्रदान की है, वहीं आज के बदलते परिवेश में इसे विवशताओं एवं दुश्चिन्ताओं का पर्याय कहाँ गया है। कवि विनोद तिवारी के शब्दों में–

'जिन्दगी मजबूरियों की सहचरी है।
एक चादर है जो पैबन्दों भरी है।।'[5]

नयी पीढ़ी के सशक्त हिन्दी ग़ज़लकार कुवंर बेचैन ने जीवन रूपी चादर को कबीरदास की भाँति यत्नपूर्वक ओढ़ने की सलाह देते हुए कहा है–

'अब अपनी जिन्दगी को पहनना संभालकर।
यह खुरदुरा–सा टाट है, मखमल नहीं कुवंर।।'[6]

आर्थिक विषमता से उत्पन्न निर्धनता एवं उसके दुश्परिणामों के विषय में भी अपनी ग़ज़लो के माध्यम से कवियों ने चिन्तन के नवीन आयामों का उद्घाटन किया है।

ओंकार गुलशन के शब्दों में–

'कितने जिस्मों पे नही आज भी कपड़ा कोई।
इस समस्या पे तो आयोग न बैठा कोई।।
X X X
चोर बनता नहीं बच्चा तो भला क्या बनता।
जब खिलौना नही, बाजार में सस्ता कोई।।'

इस प्रकार चिन्तन–प्रधान हिन्दी ग़ज़लो के अन्तर्गत सामाजिक, अध्यात्मिक, राजनीतिक एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी आधारित चिन्तन धारा को उद्वेलित किया गया है। इस दृष्टि से चिन्तन की पृष्ठभूमि पर आधारित इन ग़ज़लो का वर्ण्य–विषय अति व्यापक एवं सुविशाल है।

हिन्दी बाल ग़ज़ल

प्रौढ़ो की भांति बालक भी आज के युग में अति व्यस्त हो गया है। उसके पास इतना अवकाश ही नही रह जाता कि वह अपने लिए लिखे जा रहे लम्बे–लम्बे बाल–गीतों को पढ़, समझ और कंठस्थ कर सके। उसे ऐसी कविताओं की आवश्यकता है जो लघु आकार में सम्पूर्ण कथ्य को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखती हो। उनमें लयात्मकता का होना भी आवश्यक है जिससे बच्चे उन्हे खेल–खेल में दोहराकर गुनगुनाते हुए हृदयंगम कर सके। अपनी संक्षिप्तता, गेयता एवं सरलता के कारण हिन्दी बाल ग़ज़ले बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है।

हिन्दी में बाल ग़ज़ले लिखने का प्रारम्भ सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं बाल साहित्यकार श्री निरंकार देव सेवक से आरम्भ हुआ। इन ग़ज़लों की भाषा सरल एवं बाल बुद्धि के अनुरूप रखी गई। बाल ग़ज़लों में गेयता को विशेष महत्व दिया गया क्योंकि गेयता ही कविता का प्राण है। इनकी विषय–वस्तु भी बाल भावनाओं, कल्पनाओं, जिज्ञासाओं एवं विचारो के अनुकूल ही रखी गई। इस प्रकार बच्चे एक ही ग़ज़ल में अपने बाल–संसार की मधुर मस्ती, खेलकूद, नटखटपन एवं शैतानियों के अनेक शब्दचित्र पा सके। श्री निरंकार सेवक की एक रचना इसका उदाहरण है–

''धूप जाड़े की है सारे घर में खिली।
बैठी गमलें में मुस्कुरा रही है लिलि।।
देखने में जो लगती है मुझसे बड़ी।
मेरी छोटी बहिन है बडी सिलबिली।।
मेरी कापी पे रख आई थी रेवडी।
आज वह कापी चूहे के बिल में पडी।।
एक चुहिया जो बोली तो उलटे गिरे।
वह जो मोटे से लाल जी है पिलपिली।।[7]

हास्य बच्चों का अत्यन्त प्रिय विषय है। हंसने हंसाने वाली पाठ्य सामग्री बालक पर सीधा तथा स्पष्ट प्रभाव डालती है। श्री दामोदर अग्रवाल की कुछ बाल ग़ज़लों में हास्य तत्व को उभारकर बच्चों का मनोरंजन किया गया है। उदाहरण दृष्टव्य है–

''सौ बार हंसाया है रूलाओ कभी काका।
दाढ़ी से अपनी झाडू लगाओं कभी काका।।
कविताओं का हलुआ तो पका लेते हो बढ़िया,
खिचड़ी बना काकी को खिलाओं कभी काका।।
ऐनक तो सभी नाक के उपर है लगाते।
ऐनक के उपर नाक लगाओं कभी काका।।

हम चित्र उतारेंगे किसी भैंस के आगे,
नेकर पहन के बीन बजाओं कभी काका।।
होली में हो जाये न क्यों बूढे नौजवान,
कविता का च्यवनप्राश चटाओं कभी काका।।''

स्पष्ट है कि ग़ज़ल अब बाल–साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कर चुकी है। बाल भावनाओं के अनुरूप इस शैली में रचनाऐ की जा रही है, जिनका वर्ण्य विषय बाल संसार से सम्बद्ध है। अतः नवीनता, उपयोगिता एवं ग्राह्यता की दृष्टि से निस्संदेह बाल ग़ज़ल का भविष्य उज्जवल है।

निष्कर्ष

हिन्दी ग़ज़ल पाठक अथवा श्रोता को केवल श्रृंगारिक भावधारा में ही नही डुबोती अपितु उसे नवीन जीवन प्रदान करके संघर्ष से जूझने की प्रेरणा भी देती है। हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा पूर्व भारतेन्दु युग से आरम्भ होकर अनवरत रूप से जारी है। इस यात्रा में प्रमुख पडाव के रूप में दुष्यंत कुमार का नाम उल्लेखनीय है। ग़ज़ल के क्षेत्र में शमशेर बहादुर सिंह के प्रभाव को दुष्यंत कुमार ने सर्वाधिक स्वीकार किया है। उनकी ग़ज़लों में कथ्य एवं शिल्प पर शमशेर का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। दुष्यंत की ग़ज़लों में आम आदमी की पीड़ा एवं संत्रास का जैसा यथार्थ चित्रण हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। दुष्यंत कुमार के पश्चात् तो ग़ज़ल की परम्परा को आगे बढ़ाने वालों का एक लम्बा काफिला दृष्टिगोचर होता है। इन ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल के व्यक्तिवादी स्वर को समष्टि की ओर मोड़ कर उसे जन–चेतना से जोड़ने का सफल प्रयास किया है।

अंत टिप्पणी

1. *हिन्दी ग़ज़लः– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना – पृ. 138*
2. *हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले – सम्पादक डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल – पृ. 32*
3. *हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले – सम्पादक डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल – पृ. 42*
4. *बेढ़ब की बहक – बेढ़ब बनारसी – पृ. 10*
5. *हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले – सम्पादक डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल – पृ. 158*
6. *महावर इंतजारो का – डॉ कुँवर बैचेन – पृ. 17*
7. *बाल–साहित्य समीक्षा (फरवरी 1979) – सम्पादक डॉ. राष्ट्रबंधू – पृ. 3–4*
8. *धर्मयुग (2 से 3 मार्च 1980) – दामोदर अग्रवाल – पृ. 65*